

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे
॥ पञ्चविंशत्यधिकशततमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ पञ्चविंशत्यधिकशततमः सर्गः ॥

हनुमता निषादराजं गुहं श्रीभरतं चोपगम्य श्रीरामागमनस्य
सूचनं ततः प्रसन्नेन भरतेन तस्माद् उपहारं दातुमुद्देश्यं च

अयोध्यां तु समालोक्य चिन्तयामास राघवः।
प्रियकामः प्रियं रामस्तुतस्त्वरितरिक्त्रमः ॥ 6.125.1 ॥

चिन्तयित्वा ततो दृष्टिं रानरेषु न्यपातयत्।
उवाच धीमांस्तेजस्वी हनुमन्तं प्लवङ्गमम् ॥ 6.125.2 ॥

अयोध्यां व्ररितो गत्रा शीघ्रं प्लवङ्गसन्तम।
जानीहि कच्चिं कुशली जनो नृपतिमन्दिरे ॥ 6.125.3 ॥

शृङ्गेरपुरं प्राप्य गुहं गहनगोचरम्।
निषादाधिपतिं ब्रूहि कुशलं रचनान्मम ॥ 6.125.4 ॥

श्रुत्वा तु मां कुशलिनमरोगं रिगतज्वरम्।
भरिष्यति गुहः प्रीतः स ममात्समः सखा ॥ 6.125.5 ॥

अयोध्यायाश्च ते मार्गं प्रवृत्तिं भरतस्य च।
निरेदधिष्यति प्रीतो निषादाधिपतिर्गुहः ॥ 6.125.6 ॥

भरतस्तु व्रया राच्यः कुशलं रचनान्मम।
सिद्धार्थं शंस मां तस्मै सभार्यं सहलम्बणम् ॥ 6.125.7 ॥

হরণং চাপি রৈদেহ্যা রারণেন বলীযসা।
সুগ্রীরেণ চ সংবাদং রালিনশ্চ রধং রণে ॥ 6.125.8 ॥

মৈথিল্যন্বেষণং চৈর যথা চাধিগতা ব্রযা।
লঙ্ঘযিৎরা মহাতোষমাপগাপতিমর্যযম্ ॥ 6.125.9 ॥

উপযানং সমুদ্রস্য সাগরস্য চ দর্শনম্।
যথা চ কারিতঃ সেতু রারণশ্চ যথা হতঃ ॥ 6.125.10 ॥

বরদানং মহেন্দ্রেণ ব্রহ্মণা বরুণেন চ।
মহাদেরপ্রসাদাচ্চ পিত্রা মম সমাগমম্ ॥ 6.125.11 ॥

উপযাতং চ মাং সৌম্য ভরতায় নিবেদয।
সহ রাক্ষসরাজেন হরীণামীশ্বরেণ চ ॥ 6.125.12 ॥

জিৎরা শক্রগণান্ রামঃ প্রাপ্য চানুত্তমং যশঃ।
উপাযাতি সমৃদ্ধার্থঃ সহ মিত্রৈর্মহাবলৈঃ ॥ 6.125.13 ॥

এতচ্ছুৎরা যমাকারং ভজতে ভরতস্ততঃ।
স চ তে রেদিতর্যঃ স্যাৎ সর্বং যচ্চাপি মাং প্রতি ॥ 6.125.14 ॥

জ্ঞেযাঃ সর্বে চ বৃত্তান্তা ভরতস্যেঙ্গিতানি চ।
তত্ত্বেন মুখবর্ণেন দৃষ্ট্যা ব্যাভাষিতেন চ ॥ 6.125.15 ॥

সর্বকামসমৃদ্ধং হি হস্ত্যশ্বরথসঙ্কুলম্।
পিতৃপৈতামহং রাজ্যং কস্য নার্তযেন্মনঃ ॥ 6.125.16 ॥

সঙ্গত্যা ভরতঃ শ্রীমান্ রাজ্যেনার্থী স্বযং ভরেৎ।
প্রশাস্তু রসুধাং সর্ভামখিলাং রঘুনন্দনঃ ॥ 6.125.17 ॥

তস্য বুদ্ধিং চ রিজ্জায় ব্যরসাযং চ বানর।
যারন্ন দূরং যাতাঃ স্মঃ ক্ষিপ্রমাগন্তুমর্হসি ॥ 6.125.18 ॥

ইতি প্রতिसमादिष्टो हनुमान् मारुतात्मजः।
मानुषं धारयन् रूपमयोध्यां वररितो यथौ ॥ 6.125.19 ॥

अथोत्पपात रेगेन हनुमान् मारुतात्मजः।
गरुत्मानिर रेगेन जिघृक्षन्नुरगोत्तमम् ॥ 6.125.20 ॥

लङ्घयित्वा पितृपथं रिहगेन्द्रालयं शुभम्।
गङ्गायमुनयोर्ভীমং समतीत्य समागमम् ॥ 6.125.21 ॥

शृङ्गरेरपुरं प्राप्य गुहमासाद्य रीर्यरान्।
स राचा शुभया ह्रष्टो हनुमानिदमब्रवीत् ॥ 6.125.22 ॥

सखा तु तत्र काकुत्स्था रामः सत्यपराक्रमः।
ससीतः सह सौमित्रिः स वरां कुशलमब्रवीत् ॥ 6.125.23 ॥

पञ्चमीमद्य रजनीमुषित्वा रचनानूनेः।
भरद्वाजाभ्यनुञ्जातं द्रक्ष्यस्यत्रৈर राघवम् ॥ 6.125.24 ॥

एरमुकत्वा महातेजाः सम्प्रहृष्टतनूरुहः।
उत्पपात महारेगाद् रेगरानरिचारयन् ॥ 6.125.25 ॥

सोहपश्याद् रामतीर्थं च नदीं बालুকिनीं तथा।
बरुथीं गोमतीं चैत्र ভীমং শালরনং तथा ॥ 6.125.26 ॥

प्रजाश्च बहसाहस्रीः स्फीताङ्गनपदानपि।
स गत्रा दूरमध्वरानं वररितः कपिकुञ्जरः ॥ 6.125.27 ॥

आससाद द्रुमान् फुल्लान् नन्दिग्रामसमीपगान्।
सुराधिपस्योपरने यथा चैत्ररथे द्रुमान् ॥ 6.125.28 ॥

स्त्रीभिः सपुत्रैः पौत्रैश्च रममाणैः स्वलङ्कृतैः।
क्रोशमात्रे वरयोध्यायाश्চীরकृषाजिनाम्बरम् ॥ 6.125.29 ॥

দদর্শ ভরতং দীনং কৃশমাশ্রমরাসিনম্।
জটিলং মলদিগ্ধাঙ্গং ভ্রাতৃর্যসনকর্ষিতম্ ॥ 6.125.30 ॥

ফলমূলাশিনং দান্তং তাপসং ধর্মচারিণম্।
সমুন্নতজটাভারং বন্ধলাজিনরাসসম্ ॥ 6.125.31 ॥

নিযতং ভারিতাত্মানং ব্রহ্মর্ষিসমতেজসম্।
পাদুকে তে পুরস্কৃত্য প্রশাসন্তং রসুন্ধরাম্ ॥ 6.125.32 ॥

চাতুর্ণ্যস্য লোকস্য ভ্রাতারং সর্ৱতো ভযাৎ।
উপস্থিতমমাত্যৈশ্চ শুচিভিশ্চ পুরোহিতৈঃ ॥ 6.125.33 ॥

বলমুখ্যৈশ্চ যুক্তৈশ্চ কাষাযাম্বরধারিভিঃ।
নহি তে রাজপুত্রং তং চীরকৃষ্ণাজিনাম্বরম্ ॥ 6.125.34 ॥

পরিভোক্তুং ব্যরস্যন্তি পৌরা রৈ ধর্মরৎসলাঃ।
তং ধর্মমির ধর্মজ্ঞং দেহবন্ধমিরাপরম্ ॥ 6.125.35 ॥

উরাচ প্রাঞ্জলির্ৱাক্যং হনুমান্ মারুতাত্মজঃ।
রসন্তং দণ্ডকারণ্যে যং ত্বং চীরজটাধরম্ ॥ 6.125.36 ॥

অনুশোচসি কাকুৎস্থং স ত্বং কৌশলমব্রবীৎ।
প্রিয়মাখ্যামি তে দেৱ শোকং ত্যজ সুদারুণম্ ॥ 6.125.37 ॥

অস্মিন্ মুহূর্তে ভ্রাত্ৰা ত্বং রামেণ সহ সঙ্গতঃ।
নিহত্য রারণং রামঃ প্রতিলভ্য চ মৈথিলীম্ ॥ 6.125.38 ॥

উপযাতি সমৃদ্ধার্থঃ সহ মিত্রৈর্মহাবলৈঃ।
লক্ষ্মণশ্চ মহাতেজা রৈদেহী চ যশস্বিনী।
সীতা সমগ্রা রামেণ মহেন্দ্রেণ শচী যথা ॥ 6.125.39 ॥

এরমুক্তো হনুমতা ভরতঃ কৈকযীসুতঃ।
পপাত সহসা হৃষ্টো হর্ষান্নোহমুপাগমৎ ॥ 6.125.40 ॥

ততো মুহূর্তাদুখায় প্রত্যাশ্বস্য চ রাঘরঃ।
হনুমন্তমুরাচেদং ভরতঃ প্রিয়রাদিনম্ ॥ 6.125.41 ॥

অশোকজৈঃ প্রীতিমযৈঃ কপিমালিঙ্গ্য সম্ভ্রমাৎ।
সিষেচ ভরতঃ শ্রীমান্ রিপুলৈরশ্চবিন্দুভিঃ ॥ 6.125.42 ॥

দেরো রা মানুষো রা ংরমনুক্ৰোশাদিহাগতঃ।
প্রিয়াখ্যানস্য তে সৌম্য দদামি ব্রুরতঃ প্রিয়ম্ ॥ 6.125.43 ॥

গরাং শতসহস্রং চ গ্রামাণাং চ শতং পরম্।
সকুণ্ডলাঃ শুভাচারা ভার্যাঃ কন্যাস্তু ষোড়শ ॥ 6.125.44 ॥

হেমরর্ণাঃ সুনাসোরুঃ শশিসৌম্যাননাঃ স্ত্রিয়ঃ।
সর্বাভরণসম্পন্নাঃ সম্পন্নাঃ কুলজাতিভিঃ ॥ 6.125.45 ॥

নিশম্য রামাগমনং নৃপাত্মজঃ
কপিপ্ররীরস্য তদাদ্ভুতোপমম্।
প্রহর্ষিতো রামদিদৃক্ষ্যভরৎ
পুনশ্চ হর্ষাদিদমব্ররীদ্ রচঃ ॥ 6.125.46 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে
যুদ্ধকাণ্ডে পঞ্চত্রিংশত্যধিকশততমঃ সর্গঃ ॥